# MP Board Class 8th Sanskrit Solutions Chapter 1 लोकहितं मम करणीयम्

प्रश्न 1.
एकपदेन उत्तरं लिखत (एक शब्द में उत्तर लिखो-)
(क) मनसा किं करणीयम्? (मन से क्या करना चाहिए?)
उत्तर:
स्मरणीयम्। (स्मरण करना चाहिए।)

(ख) वचसा किं करणीयम्? (वाणी से क्या करना चाहिए?)
उत्तर:
वदनीयम्। (बोलना चाहिए।)

(ग) कस्मिन् न रमणीयम्? (किसमें नहीं रहना चाहिए?)
उत्तर:
भोगभवने। (सुख देने वाले घर में।)

(घ) किंन गणनीयम्? (क्या नहीं ध्यान रखना चाहिए?)
उत्तर:
दुःखम्। (दुःख को।)

(ङ) किंन मननीयम्? (क्या नहीं सोचना चाहिए?)
उत्तर:
निजसौख्यम्। (अपने सुख को।)

प्रश्न 2.
एकवाक्येन उत्तरं लिखत (एक वाक्य में उत्तर लिखो)
(क) कुत्र त्वरणीयम्? (कहाँ शीघ्रता करनी चाहिए?)
उत्तर:
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्। (कार्य के क्षेत्र में शीघ्रता करनी चाहिए।)

(ख) कस्मिन् तरणीयम्? (किसमें तैरना चाहिए?)
उत्तर:
दुःखसागरे तरणीयम्। (दुःख रूपी सागर में तैरना चाहिए।)

(ग) कुत्र चरणीयम्? (कहाँ चढ़ना चाहिए?)
उत्तर:
कष्टपर्वते चरणीयम्। (कष्टरूपी पर्वत पर चढ़ना चाहिए।)

(घ) विपत्ति-विपिने किं करणीयम्? (संकट रूपी वन में क्या करना चाहिए?)
उत्तर:
विपत्ति-विपिने भ्रमणीयम्। (संकट रूपी वन में घूमना चाहिए।)

(ङ) मम किं करणीयम्? (मुझे क्या करना चाहिए?)
उत्तर:
मम लोकहितं करणीयम्। (मुझे संसार का कल्याण करना चाहिए।)

प्रश्न 3.
उचितं योजयत (उचित को जोड़ो-)

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| (क) मनसा | (i) सततं वदनीयम् |
| (ख) वचसा | (ii) सततं स्मरणीयम् |
| (ग) भोगभवने | (iii) जागरणीयम् |
| (घ) लोकहितं | (iv) न रमणीयम् |
| (ङ) अहर्निशं | (v) करणीयम्। |

उत्तर:
(क) → (ii)
(ख) → (i)
(ग) → (iv)
(घ) → (v)
(ङ) → (iii)

प्रश्न 4.
शुद्धवाक्यानां समक्षम् 'आम्' अशुद्धवाक्यानां समक्षं'न' इति लिखत
(शुद्ध वाक्यों के सामने 'आम्' (हाँ) तथा अशुद्ध वाक्यों के सामने 'न' (नहीं) लिखो-)
(क) कष्टपर्वते चरणीयम्।
(ख) दुःखसागरे न तरणीयम्।
(ग) न जातु दुःखं गणनीयम्।
(घ) विपत्ति-विपिने न भ्रमणीयम्।
(ङ) अहर्निशं जागरणीयम्।
उत्तर:
(क) आम्
(ख) न
(ग) आम्
(घ) न
(ङ) आम्।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 5.
उचितपदेन रिक्तस्थानं पूरयत(उचित शब्द द्वारा रिक्त स्थानों को भरो-)
(क) बन्धुजना ये स्थिता .....। (सागरे/गह्वरे)
(ख) लोकहितं .....। (वदनीयम्।करणीयम्)
(ग) भोगभवने ..... । (रमणीयम्/न रमणीयम्)
(घ) कार्यक्षेत्रे .....। (तरणीयम्/त्वरणीयम्)
(ङ) कष्टपर्वते .....। (करणीयम्/चरणीयम्)

उत्तर:
(क) गह्वरे
(ख) करणीयम्
(ग) न रमणीयम्
(घ) त्वरणीयम्
(ङ) चरणीयम्।

प्रश्न 6.
नामोल्लेखपूर्वक समासविग्रहं कुरुत(नाम का उल्लेख करते हुए समास विग्रह करो-)
(क) लोकहितम्
(ख) भोगभवने
(ग) कार्यक्षेत्रे
(घ) दुःख-सागरे
(ङ) कष्टपर्वते।
उत्तर:

| समस्त पदम् | समास-विग्रहः | समासस्य नाम |
|---|---|---|
| **(क)** लोकहितम् | लोकस्य हितम् | तत्पुरुषः |
| **(ख)** भोगभवने | भोगस्य भवने | तत्पुरुषः |
| **(ग)** कार्यक्षेत्रे | कार्यस्य क्षेत्रे | तत्पुरुषः |
| **(घ)** दुःखसागरे | दुःखस्य सागरे | तत्पुरुषः |
| **(ङ)** कष्टपर्वते | कष्टस्य पर्वते | तत्पुरुषः |

प्रश्न 7.
रिक्तस्थानम् पूरयत (खाली जगह भरो-)
उत्तर:
(क) **न जातु दुःखं** गणनीयम्, **न च निज सौख्यं** मननीयम्।
**कार्यक्षेत्रे** त्वरणीयम्, लोकहितम् **मम करणीयम्**॥

(ख) दुःख सागरे **तरणीयम्,** कष्टपर्वते **चरणीयम्**।
**विपत्ति-विपिने** भ्रमणीयम्, **लोकहितम्मम** करणीयम्॥

प्रश्न 8.
उदाहरणानुसारं धातुं प्रत्ययं च पृथक्कुरुत(उदाहरण के अनुसार धातु और प्रत्यय अलग करो-)

प्रश्न 9.
"मम कर्त्तव्यम्" इति विषयमवलम्ब्य संस्कृते दशवाक्यानि लिखत।
("मेरा कर्तव्य" इस विषय पर संस्कृत में दस वाक्य लिखो।)
उत्तर:
व्याकरण भाग में निबन्ध रचना देखें।

| शब्दः | धातुः | + | प्रत्ययः |
|---|---|---|---|
| उदाहरणम्— | | | |
| स्मरणीयम् | स्मृ | + | अनीयर् |
| (क) करणीयम् | कृ | + | अनीयर् |
| (ख) रमणीयम् | रम् | + | अनीयर् |
| (ग) शयनीयम् | शी | + | अनीयर् |
| (घ) जागरणीयम् | जागृ | + | अनीयर् |
| (ङ) गणनीयम् | गण् | + | अनीयर् |
| (च) मननीयम् | मन् | + | अनीयर् |
| (छ) त्वरणीयम् | त्वर् | + | अनीयर् |
| (ज) तरणीयम् | तृ | + | अनीयर् |
| (झ) भ्रमणीयम् | भ्रम् | + | अनीयर् |
| (ज) सञ्चरणीयम् | सञ्चर | + | अनीयर् |

प्रश्न 10.
"लोकहितं मम करणीयम्" इत्यस्मिन् पाठे आगतानि अव्ययानि चित्वा लिखत।
("लोकहितं मम करणीयम्" इस पाठ में आये हुए अव्ययों को चुनकर लिखो।)
उत्तर:
(क) सततम्
(ख) न
(ग) च
(घ) अहर्निशम्
(ङ) जातु
(च) दुःखम्
(छ) निज
(ज) तत्र।

https://www.evidyarthi.in/